उत्पादकता में अंतर घटना बड़ी चुनौती

राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव

- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का हीरक जयंती समारोह शुरू, केंद्रीय-राज्य मंत्री तारिक अनवर ने घटती कृषि भूमि को चुनौती बताया

जागरण संवाददाता, लखनऊ : चीन में जहां 14 करोड़ हेक्टेयर भूमि में 57 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन होता है, वहीं भारत में सिर्फ 25 करोड़ टन खाद्यान्न पैदा होता है। दिनोंदिन कम हो रही कृषि भूमि के मद्देनजर वैज्ञानिकों के समक्ष इस अंतर को कम करना बड़ी चुनौती है।

यह कहना है केंद्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर का। वह शनिवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की हीरक जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय इस महोत्सव का उद्घाटन केंद्रीय राज्य मंत्री ने कहा कि कोल्ड स्टोरेज, कोल्ड चेन व खाद्य प्रसंस्करण की पर्याप्त व्यवस्था न होने के कारण फल व सब्जियों का भरपूर उत्पादन होने के बावजूद 25 से 40 फीसद फल-सब्जियां बर्बाद हो जाती है। कृषि मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार आनंद सिंह ने कहा कि कृषि में मशीनों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे किसानों की आय तो बढ़ेगी ही साथ ही लागत में भी कमी आएगी।

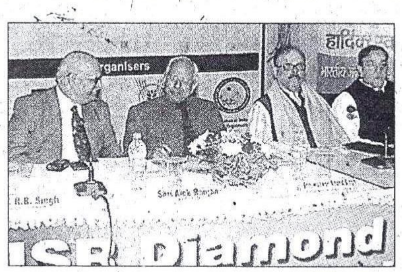

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के हरीक जयंती समारोह में शिरकत करते केंद्रीय मंत्री तारिक अनवर व अन्य जागरण

संस्थान के निदेशक सुशील सोलोमन ने बीते 60 वर्ष की उपलब्धियों का ब्योरा दिया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार साह ने बताया कि संस्थान द्वारा विकसित गन्ना प्रजातियां जैसे कोलख 8001, कोलख 8102, कोलख 94184, कोलख 9707 से प्रदेश सहित बिहार, पंजाब व हरियाणा के गन्ना किसानों की आय में इजाफा हुआ है। संस्थान द्वारा बिहार में उन्नत गन्ना एवं चीनी उद्योग को सुदृढ़ करने के लिए समझौता किया गया है। इसके तहत बिहार सरकार 6.5 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता से उन्नत गन्ना प्रजातियों के स्वस्थ बीज का उत्पादन किया जाएगा। वर्ष 2013 को 'इयर ऑफ आउटरीच' घोषित किया गया है। इसके तहत संस्थान विकसित तकनीकों को दूर-दराज के गांव तक गन्ना किसानों को पहुंचाने के लिए कार्यक्रम चलाए जाएंगे।

स्वतंत्र भारत लखनऊ, रविवार, 17 फरवरी, 2013 (5) राजधानी

कृषि से ही मिटेगी गरीबी : तारिक

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में शर्करा महोत्सव और कृषि मेला आयोजित

प्रमुख संवाददाता

लखनऊ। केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर ने कहा कि हमें कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता देनी होगी तभी देश की अर्थव्यवस्था में वास्तविक गति आयेगी और गरीबी मिट सकेगी। केन्द्र सरकार का प्रयास है कि किसानों से सीधा संवाद हो जिससे उन्हे कृषि क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों की जानकारी मिल सके। श्री तारिक यहां भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की स्थापना के हीरक जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव में मुख्य अतिथि की हैसियत से बोल रहे थे। इस अवसर पर 'एग्रो टेक-२०१३' नामक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

केन्द्रीय मंत्री ने आगे कहा कि आत्मा योजना उत्तर प्रदेश के २५ जिलों में संचालित की जा रही है जिसका उद्देश्य किसानों को बीज और खाद के सही इस्तेमाल द्वारा उपज बढ़ाने का प्रयास करना है। हमारे देश में २५ से ४० प्रतिशत अनाज और फल सब्जियां कोल्ड चेन और भंडारण क्षमता में कमी के कारण बर्बाद हो जाती है। इस समस्या का निदान प्राथमिकता के आधार पर करना होगा। इसके अतिरिक्त देश में मात्र ७ से ८ प्रतिशत फल और सब्जियों की प्रोसेसिंग हो पाती है जबकि अन्य विकसित देशों में यह प्रतिशत ५० से ७० है। किसानों का आय स्तर बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में गम्भीरता से कार्य करने की आवश्यकता है। प्रदेश के कृषि मंत्री कुंवर आनंद सिंह ने कृषि की गुणवत्ता बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे किसान मेहनत तो बहुत करते हैं परन्तु जापान के किसान जितना १०० घन्टे मेहनत करके उपजाते हैं उतना हमारे देश के किसान ५०० घन्टे मेहनत करके पैदा कर पाते है। इसके लिए आवश्यकता है कि किसानों की क्षमता वृद्धि की जाय और उन्हें संसाधनों से मजबूत किया जाय। देश धरती और किसान समृद्ध हो ऐसी कृषि आधारित नीति सरकार बनायेगी। किसानों की जेब में क्या जाता है इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कृषि में मशीनीकरण जरूरी है, खेती अब विज्ञान हो गयी है। इसलिए किसान का पढ़ा लिखा होना जरूरी है।

कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन ने कहा कि प्रदेश सरकार कृषि को उच्चतम प्राथमिकता दे रही है। सरकार की डेयरी, सब्जी एवं पोल्ट्री को उद्योग के रूप में विकसित करने की योजना है। संस्थान के निदेशक डा. एस सोलोमन ने कहा कि बीज, गन्ने की बचत और कटाई उपरान्त शर्करा ह्रास को रोकने के लिए संस्थान ने उन्नत तकनीक विकसित की है। इसके अलावा संस्थान ने गन्ने की खेती के लिए यांत्रिकी के क्षेत्र में विशेष कार्य करते हुए ट्रैक्टर चालित बुआाई एवं खरपतवार नाशक यंत्र का भी विकास किया है। वर्तमान में संस्थान फसल सुधार के तंहत जैव

तकनीक पर विशेष ध्यान दे रहा है।

श्री अनवर ने कृषि विषयों पर आधारित पत्रिकाओं और कलेन्डर का विमोचन भी किया। कृषि यंत्रों के स्टाल का भी तारिक अनवर ने निरीक्षण किया। इसमें भाग लेने के लिए किसान भी बुलाये गये थे। किसानों ने स्टालों पर जाकर कृषि यंत्रों के संबंध में विस्तार से जानकारी हासिल की। इस अवसर पर सांसद डा. संजय सिंह, कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन, विशेष सचिव कृषि सिराज हुसैन आदि भी उपस्थित थे।

देश में सबसे बड़ी चुनौती खाद्य सुरक्षा : तारिक अनवर

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के हीरक जयंती समारोह का उद्घाटन किया केंद्रीय कृषि व खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री ने

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

स्मारिका विमोचन के अवसर पर भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक सुशील सोलोमन, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. आरबी सिंह, राज्य के कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन, उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री आनंद सिंह, केंद्रीय कृषि व खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर, सांसद डॉ. संजय सिंह व अन्य

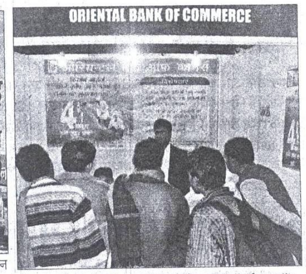

हीरक जयंती समारोह में लगा ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स का स्टॉल

लखनऊ। केंद्रीय कृषि व खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर ने कहा कि देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती खाद्य सुरक्षा की है। शीतगृहों के अभाव में 25 से 40 फीसद तक फल व सब्जियां बरबाद हो जाती हैं। इसका सीधा नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। इसमें सुधार की जरूरत है। भारत सरकार इस दिशा में काम कर रही है। श्री अनवर शनिवार को यहां भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के हीरक जयंती समारोह के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की एक तिहाई आबादी कृषि पर आधारित है। जब तक किसानों की हालत नहीं सुधरती, तब तक देश तरक्की नहीं कर सकता है। उन्होंने कहा कि दुग्ध के क्षेत्र में प्रथम व सब्जी एवं फलों के उत्पादन में भारत का स्थान विश्व में दूसरा है। कृषि राज्यमंत्री ने कहा कि आज जरूरत है कि हम इस क्षेत्र में और ज्यादा आधुनिक तकनीकी अपना कर और आगे बढ़ें। श्री अनवर ने भारत में चीन के मुकाबले कम कृषि उत्पादकता पर चिंता जताई और कहा कि जहां चीन में 14 करोड़ हेक्टेयर भूमि में 57 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन होता है, वहीं हमारे देश में उतनी ही जमीन पर सिर्फ 25 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन होता है। इस अंतर को खत्म करने के लिए कृषि शोध और विकास में तेजी लाने की जरूरत है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री ने कहा कि पूरे देश में किसानों की सुविधा के लिए आत्मा योजना चलाई जा रही है।

उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री आनंद सिंह ने कहा कि हमारी सरकार देश, धरती व किसान समृद्ध हो, इसके लिए कृषि आधारित नीति बनाने के लिए तत्पर है। उन्होंने कहा कि आज यह समझने की जरूरत है कि किसानों की जेब में जाता क्या है। उन्होंने किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि लागत में कमी लाने पर जोर दिया। श्री सिंह ने प्रदेश में सरकार की कृषि से सम्बन्धित नीतियों से भी अवगत कराया।

संस्थान के निदेशक सुशील सोलोमन ने कहा कि 60 वर्ष की अपनी यात्रा में यहां अनूठे शोध कार्यक्रमों को अंजाम दिया जा रहा है। यही कारण है कि आज यह गन्ना संस्थान अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार शाह ने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित उन्नत गन्ना प्रजातियां कोलख 8001, कोलख 8102, कोलख 94184, कोलख 9709 से उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब एवं हरियाणा के गन्ना किसानों को अधिकतम उपज मिल सका है। लिहाजा किसानों को ज्यादा आय हुई। संस्थान द्वारा विकसित अंतरालित प्रतिरोपण विधि, बड़ चिप विधि एवं केन-नोड तकनीक ने नई गन्ना उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर गन्ना एवं चीनी की मांग को पूरा करने में भरपूर सहायता मिली। सिंचाई जल बचत के लिए संस्थान द्वारा विकसित एकांतर नाली सिंचाई विधि एवं क्रांतिक वृद्धि अवस्था में सिंचाई तकनीक ने पानी जैसी अमूल्य प्राकृतिक सम्पदा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. शाह ने कहा कि गन्ना उत्पादन तकनीकों को किसानों तथा चीनी मिलों तक कम समय में पहुंचाने के लिए संस्थान द्वारा तकनीकी हस्तांतरण कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण, प्रदर्शन, किसान मेला, गोष्ठी एवं जागरूकता कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया जाता है। इस दिशा में एक सकारात्मक पहल करते हुए संस्थान ने बिहार में उन्नत गन्ना व चीनी उद्योग को सुदृढ़ करने के लिए एक समझौता किया गया है। इसके तहत अगले पांच वर्ष में बिहार सरकार द्वारा साढ़े छह करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता से स्वस्थ बीज का उत्पादन किया जाएगा। राज्य के कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन, भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के विशेष सचिव सिराज हुसैन, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. आरबी सिंह, सांसद डॉ. संजय सिंह आदि ने भी सम्बोधित किया। एग्रीकल्चर टुडे के निदेशक डॉ. एमजे खांन ने इस कार्यक्रम में आयोजित एग्रोटेक के उद्देश्य के बारे में बताया। संचालन अनीता सावनानी ने किया। समारोह के तहत संस्थान परिसर में विभिन्न वित्तीय संस्थाओं, कृषि यंत्र बनाने वाली कम्पनियों, बीज व कीटनाशक दवाओं की कम्पनियों के स्टाल लगाए गए हैं। उद्घाटन समारोह के बाद डॉ. एमजे खान के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में कृषि विकास पर गोलमेज सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

अमर उजाला
लखनऊ | रविवार | 17 फरवरी 2013

राजधानी

किसानों के विकास से ही कृषि का विकास संभव

कृषि मंत्री ने माना- किसानों को नहीं मिलता समर्थन मूल्य का लाभ

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। प्रदेश के कृषि मंत्री आनंद सिंह का मानना है कि कृषि के विकास के लिए किसानों का विकास ही एकमात्र तरीका है। सरकार फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य तय तो कर रही है लेकिन इसका फायदा आज भी बिचौलिए ही ले रहे हैं। वे राजधानी के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च (आईआईएसआर) में शनिवार से शुरू हुए तीन दिवसीय हीरक जयंती समारोह, एग्रो टेक 2013 और नेशनल शुगर फेस्ट समारोह को संबोधित कर रहे थे।

कृषि मंत्री ने किसानों में शिक्षा की जरूरत बताई और कहा कि अमेरिकी किसान दिनभर में औसतन तीन घंटे मक्के की फसल पर काम करते हैं फिर भी एक एकड़ में 25 क्विंटल उपज पाते हैं। भारत में कृषि कार्य में दिनभर जुटे रहने वाले किसान छह क्विंटल उपज़ ही ले पाते हैं। इससे पहले आईआईएसआर के सभागार में केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन से हीरक जयंती समारोह का शुभारंभ किया। एग्रो टेक के अध्यक्ष डॉ. एमजे खान ने स्वागत भाषण दिया तो आईआईएसआर के निदेशक डॉ. एस सोलोमन ने संस्थान के 60 साल पूरे होने पर उसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

बारिश के बीच एग्रो टेक और शुगर फेस्ट का उद्घाटन : केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री सहित सभी अतिथियों ने बारिश के बीच आईआईएसआर कैंपस में लगे एग्रो टेक 2013 व शुगर फेस्ट का उद्घाटन किया।

बारिश के बीच आईआईएसआर में तीन दिवसीय आयोजनों की शुरुआत

आईआईएसआर में दीप प्रज्ज्वलित करते केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर व प्रदेश के कृषि मंत्री आनंद सिंह। →

महोत्सव के उद्घाटन से पूर्व बारिश का पानी भर जाने के कारण अस्त व्यस्त हुआ परिसर।

सरकार शोध में निजी कंपनियों को सहयोग देगी ताकि बेहतर बीज तैयार किए जा सकें। कंपनियां हमेशा अपना फायदा देखती हैं और वहीं शोध करती हैं जहां लाभ ज्यादा हो। यही वजह है कि बीते एक दशक में प्रति हेक्टेयर मक्का का उत्पादन चार प्रतिशत, कपास का 10 प्रतिशत और सब्जियों का 15 प्रतिशत तक बढ़ा है लेकिन गन्ना और अन्य फसलों में उत्पादन वृद्धि एक प्रतिशत ही रही। **- डॉ. जी शुक्ला, एमडी, मोन्सेंटो (भारत)**

राष्ट्रीय सुरक्षा बिल जल्दी ही लागू होने की संभावना है। इसमें 1.30 लाख करोड़ रुपए का निवेश होगा। राज्य सरकारों से इसमें सहयोग अपेक्षित है।
- सिराज हुसैन, विशेष सचिव कृषि (उप्र)

आजादी के वक्त उत्तर प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय सर्वाधिक थी तो आज राष्ट्रीय औसत से भी आधी है। इसे दूर करने के लिए किसानों, विशेषकर छोटे किसानों के लिए विशेष योजनाओं की जरूरत है। **- प्रो. आरबी सिंह, अध्यक्ष, एनएएएस**

छोटे किसानों के लिए अलग से नीतियां बनाने और उन्हें गंभीरता से लागू करने की जरूरत है। इसके बिना किसानों का विकास संभव नहीं है।
डॉ. संजय सिंह, सांसद

फूड प्रोसेसिंग के विकास से बदलेंगे हालात

आईआईएसआर के समारोह में बोले केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री

लखनऊ (ब्यूरो)। केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर का मानना है कि उत्तर प्रदेश के किसानों के हालात बदलने में खाद्य प्रसंस्करण (फूड प्रोसेसिंग) उद्योगों का विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। हालांकि, अब तक इस दिशा में कोई बड़ी पहल नहीं हो सकी है जिसका नुकसान न केवल प्रदेश के किसानों को बल्कि खाद्य आत्मनिर्भरता मसले पर देश को भी हुआ है। तारिक अनवर शनिवार को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च (आईआईएसआर) में आयोजित विभिन्न समारोहों के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

प्रदेश के कृषि उत्पादक आयुक्त आलोक रंजन ने बताया कि फूड प्रोसेसिंग को लेकर राज्य सरकार ने जो पहल की है, उससे एक महीने में उद्योग जगत से 42 प्रस्ताव राज्य सरकार को मिले हैं। इनके जरिए प्रदेश में फूड प्रोसेसिंग के लिए करीब 241 करोड़ का निवेश होगा। राज्य सरकार अगले एक महीने में इन प्रस्तावों को लागू करवाने के लक्ष्य के साथ काम करेगी। केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री ने बताया कि एक ओर भारत में जहां सिर्फ आठ प्रतिशत कृषि उत्पादन से फूड प्रोसेसिंग हो रही है तो दूसरी ओर यूरोपीय देशों में 60 से 70 प्रतिशत उत्पादन फूड प्रोसेसिंग में जाता है। इसका खामियाजा किसानों को हर साल 25 से 40 प्रतिशत तक फसल उत्पादन बेकार जाने के रूप उठाना पड़ता है। इसमें से अधिकतर फसलें फलों और सब्जियों की होती हैं जबकि विकसित देशों में फसलों के जाया होने जैसी कोई समस्या नहीं है क्योंकि वहां का फूड प्रोसेसिंग उद्योग उन्हें कोल्ड स्टोरेज, वेयर हाउस आदि की सुविधाएं देता है।

राष्ट्रीय सहारा
अपना शहर
लखनऊ
लखनऊ । रविवार ● 17 फरवरी ● 2013

गन्ना अनुसंधान संस्थान की हीरक जयंती पर स्मारिका का विमोचन करते (दाएं से) सांसद डा. संजय सिंह, केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर, प्रदेश के कृषि मंत्री आनंद सिंह व अन्य ।

कृषि उत्पादन बढ़ाने को शोध हों : तारिक

लखनऊ (एसएनबी) । केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य राज्यमंत्री तारिक अनवर ने कहा कि भारत के मुकाबले चीन में अधिक कृषि उत्पादन है जो हमारे लिए चिंता का विषय है। हमारे वैज्ञानिकों को कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए शोध करना होगा। वे शनिवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के 60 वर्षगांठ पर रायबरेली रोड स्थित संस्थान परिसर में आयोजित हीरक जयंती समारोह एवं राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस मौके पर श्री अनवर ने कहा कि चीन जहां 14 करोड़ हेक्टेयर भूमि में 57 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन करता है, वहीं भारत में उतनी ही जमीन पर सिर्फ 25 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन किया जा रहा है। श्री अनवर ने कहा कि फल और सब्जियां 25 से 40 प्रतिशत तक खराब हो जाती हैं। इस बर्बादी को भी रोकने के लिए कोल्ड स्टोरेज व कोल्ड चेन के साथ ही फूड प्रोसेसिंग में मजबूती लानी होगी। समारोह में प्रदेश के कृषि मंत्री आनन्द सिंह ने कहा कि प्रदेश की मौजूदा सरकार की कृषि नीति से किसानों को काफी लाभ मिलेगा। किसानों को आमदनी बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक मशीनों का उपयोग करने की जानकारी देनी होगी। संस्थान के निदेशक सुशील सोलोमन ने समारोह में संस्थान की उपलब्धियों की जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 अजय कुमार साह ने कहा कि संस्थान की विकसित मशीनों के उपयोग से गन्ने का उत्पादन काफी बढ़ा है। इससे पहले अश्वनी शर्मा व अनीता सावननी अतिथियों का स्वागत किया।

किसानों को मिले बेहतर लाभ : तारिक अनवर

युनाइटेड ब्यूरो

लखनऊ, १६ फरवरी।भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ अपने स्थापना के हीरक जयंती के उपलक्ष्य में १६ व १८ फरवरी २०१३ को राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव का आयोजन कर रहा है जिसका शुभारम्भ आज संस्थान परिसर में माननीय केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री, भारत सरकार, तारिक अनवर द्वारा किया गया। इस उपलक्ष्य में एग्रीकल्चर टुडे समूह, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में एग्रो टेक-२०१३ का भी आयोजन हो रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य कृषि विकास से उत्तर प्रदेश में समग्र विकास की प्राप्ति करना है।

इस अवसर पर श्री अनवर ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की ६० वर्ष की उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए कहा कि हमें कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता देनी होगी तभी देश की अर्थव्यवस्था में वास्तविक गति आयेगी और गरीबी मिट सकेगी। केन्द्र सरकार का प्रयास है कि किसानों से सीधा संवाद हो जिससे उन्हे कृषि क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों की जानकारी मिल सके। आत्मा योजना उत्तर प्रदेश के २५ जिलों में संचालित की जा रही है जिसका उद्देश्य किसानों को बीज और खाद के सही इस्तेमाल द्वारा उपज बढाने का प्रयास करना है। हमारे देश में २५ से ४० प्रतिशत अनाज व फल सब्जियां कोल्ड चेन और भंडारण क्षमता में कमी के कारण बर्बाद हो जाती है।

इस समस्या का निदान प्राथमिकता के आधार पर करना होगा। इसके अतिरिक्त देश में मात्र ७ से ८ प्रतिशत फल व सब्जियों की प्रोसेसिंग हो पाती है जबकि अन्य विकसित देशों में यह प्रतिशत ५० से ७० है। किसानों का आय स्तर बढाने के लिए इस क्षेत्र में गम्भीरता से कार्य करने की आवश्यकता है।

उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री कुंवर आनंद सिंह ने कृषि की गुणवत्ता बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे किसान मेहनत तो बहुत करते हैं परन्तु जापान के किसान जितना १०० घन्टे मेहनत करके उपजाते हैं उतना हमारे देश के किसान ५०० घन्टे मेहनत करके पैदा कर पाते है। अतः आवश्यकता है कि किसानों की क्षमता वृद्दि की जाय, उन्हें संसाधनों से मजबूत किया जाय।इस अवसर पर श्री अनवर ने कृषि विषयों पर आधारित पत्रिकाओं और कलेन्डर का विमोचन भी किया। इस अवसर पर डा. संजय सिंह, माननीय सांसद, कुअंर आनंद सिंह, माननीय कृषि मंत्री उ.प्र. , आलोक रंजन, ए.पी.सी. उ.प्र., डा. जी. शुक्ला, मैनेजिंग डायरेक्टर, मोन्सटो इन्डिया, सिराज हुसैन, विशेष सचिव, कृषि, उ.प्र., प्रो. आर. बी. सिंह, प्रेसीडेन्ट, एन.ए.ए.एस., ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

जनसंदेश टाइम्स लखनऊ, रविवार, 17 फरवरी 2013

कृषि अनुसंधान का लाभ किसानों को मिले

तभी देश की अर्थव्यवस्था में वास्तविक गति आयेगीः तारिक

लखनऊ। भारत सरकार के कृषि व खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर ने कहा है कि कृषि अनुसंधान में इस बात का ध्यान रखना होगा कि इसका लाभ किसानों को मिले। हमें कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता देनी होगी तभी देश की अर्थव्यवस्था में वास्तविक गति आयेगी और गरीबी मिट सकेगी। केन्द्र सरकार का प्रयास है कि किसानों से सीधा संवाद हो जिससे उन्हें कृषि क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों की जानकारी मिल सके। किसानों का आय स्तर बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में गम्भीरता से कार्य करने की आवश्यकता है।

लखनऊ स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की हीरक जयंती के मौके पर शनिवार से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आत्मा योजना उत्तर प्रदेश के 25 जिलों में संचालित की जा रही है। इसका उद्देश्य किसानों को बीज और खाद के सही इस्तेमाल द्वारा उपज

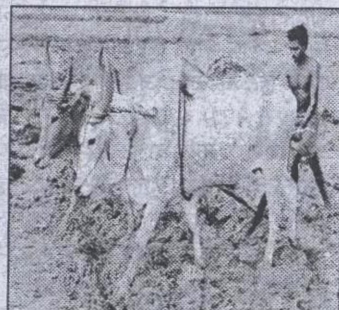

शर्करा महोत्सव

आनंद सिंह ने कृषि की गुणवत्ता बढ़ाने तथा संसाधनों को मजबूत करने पर बल दिया

बढ़ाने का प्रयास करना है। हमारे देश में 25 से 40 प्रतिशत अनाज व फल सब्जियां कोल्ड चेन और भंडारण क्षमता में कमी के कारण बर्बाद हो जाती है। इस समस्या का निदान प्राथमिकता के आधार पर करना होगा। इसके अलावा देश में मात्र 7 से 8 प्रतिशत फल व सब्जियों की प्रोसेसिंग हो पाती है जबकि अन्य विकसित देशों में यह प्रतिशत 50 से 70 है। उन्होंने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की 60 वर्ष की उपलब्धियों के लिए बधाई भी दी। शुभारम्भ समारोह में उप्र के कृषि मंत्री कुंवर आनंद सिंह ने कृषि की गुणवत्ता बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारे किसान मेहनत तो बहुत करते हैं लेकिन जापान के किसान जितना 100 घंटे मेहनत करके उपजाते हैं उतना हमारे देश के किसान 500 घंटे मेहनत करके पैदा कर पाते हैं। इसलिए आवश्यकता है कि किसानों की क्षमता वृद्धि की जाये और उन्हें संसाधनों से मजबूत किया जाये।

इस अवसर पर तारिक अनवर ने कृषि विषयों पर आधारित पत्रिकाओं और कैलेंडर का विमोचन भी किया। इस अवसर पर सांसद डा. संजय सिंह, प्रदेश के कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन, मोनसेंटो इंडिया के एमडी डा. जी. शुक्ला तथा विशेष सचिव कृषि सिराज हुसैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ब्यूरो

किसानों की दशा सुधरे बिना पैदावार बढ़ाना मुश्किल

लखनऊ | निज संवाददाता

कैसे बढ़े उत्पादन

- आईआईएसआर हीरक जयंती समारोह और एग्रोटेक 2013
- कृषि मंत्री ने बताया, कृषि नीति में किसानों और मिट्टी का ध्यान रखेगी सरकार
- जानकारों ने बताईं खेती की चुनौतियां और जरूरतें

हीरक जयंती समारोह के साथ संस्थान की पुस्तक का विमोचन। • हिन्दुस्तान

देश में किसानों की स्थिति ठीक नहीं है। जब तक किसान की दशा नहीं सुधरती, देश की दशा में भी सुधार संभव नहीं है। हम अनाज की पैदावार में चीन से काफी पीछे हैं। चीन ने वर्ष 2012 में 97 करोड़ टन अनाज पैदा किया जबकि भारत में 25 करोड़ टन अनाज पैदा हुआ। जबकि भारत व चीन दोनों में ही कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल बराबर यानी 14 करोड़ हेक्टेयर है।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) के हीरक जयंती समारोह और एग्रोटेक 2013 के उद्‌घाटन समारोह में शनिवार को मुख्य अतिथि केंद्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर ने यह बातें कहीं। कार्यक्रम में प्रदेश के कृषि मंत्री कुंवर आनंद सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार कृषि नीति ला रही है जिसमें अनाज अधिक पैदा हो लेकिन मिट्टी को खराब न हो इस बात पर जोर दिया गया है। उन्होंने मांग उठाई कि केंद्र सरकार स्टोरेज के क्षेत्र में मदद करे जहां पर किसान की उपज समुचित तरीके से रखी जा सके।

कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन ने कहा कि प्रदेश सरकार ने एग्री एंड फूड प्रोसेस कानून बनाया है। अभी शासनादेश जारी भी नहीं हुआ लेकिन 241 करोड़ रुपए के 42 प्रोजेक्ट आ गए हैं। इससे किसानों को फायदा होगा। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डॉ. आरबी सिंह ने कहा कि प्रदेश में कृषि विज्ञान के क्षेत्र में शोध कम हो रहे हैं। कृषि वैज्ञानिक भर्ती में भी यूपी की भागीदारी बहुत कम है। सांसद डॉ. संजय सिंह ने किसानों को होने वाले फायदे पर बहस की जरूरत बताई।

एग्रोटेक के आयोजक डॉ. एमजे खान ने कहा कि प्रदेश सरकार खेती के विकास के लिए टास्क फोर्स बनाए जिसमें वैज्ञानिक, किसान, सरकार और उद्यमी शामिल किए जाएं। मोनटांस कंपनी के प्रबंध निदेशक डॉ. जी शुक्ला ने कहा कि लोगों को केवल चावल ही नहीं चाहिए बल्कि सब्जी, दाल और फल भी चाहिए। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राइवेट पार्टनरशिप में काम करने की जरूरत है। इस मौके पर गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. सुशील सोलोमन संस्थान की नई खोजों के बारे में जानकारी दी। कई किताबों और जरनल का विमोचन हुआ। संस्थान में कंपनियों के स्टाल लगे हैं जहां पर किसानों को खेती की आधुनिक तकनीक की जानकारी दी जा रही है।

sunday pioneer
city 04
LUCKNOW SUNDAY | FEBRUARY 17, 2013

Concern voiced over low agricultural output

Union Minister of State for Agriculture and Food Processing Industries Tariq Anwar and others releasing a book at National SugarFest-2013 Pioneer

PIONEER NEWS SERVICE
LUCKNOW

Union Minister of State for Agriculture and Food Processing Industries Tariq Anwar said that stress should be laid on reducing the production gap occurring because of the low productivity in the country's agriculture sector as the same was imperative for feeding the entire population in coming years.

He was speaking as the chief guest in the inaugural session of three-day National SugarFest-2013 at the Indian Institute of Sugarcane Research on Saturday. The occasion was aimed to commemorate the IISR diamond jubilee celebration and the glorious journey of 60 years since its inception in 1952.

While inaugurating the fest, the Union Minister said that India was producing only 25 crore tonnes of foodgrains on 140 millions hectares of land while China was producing 57 crore tonnes of foodgrains on the same area of land. "If we want to feed the entire population with a balanced nutrition in coming 10-15 years, we will have to reduce this gap by enhancing our efforts in [development]," he added.

He stressed that due to poor infrastructure like cold storage, cold chain, food processing units, we have to face 25-40 per cent of loss or wastage in vegetables, fruits and grains. "We will have to work for strengthening the infrastructure so as to avoid the loss or wastage and increase the viability of the same," he added.

State Minister for Agriculture Anand Singh said that the state and the country could progress only when farmers were in a better state. "In UP, we are trying our level best to improve their economic condition through various schemes," he added. He emphasised on the mechanisation of sugarcane and agriculture sectors to solve the problem of labour scarcity.

President, National Academy of Agricultural Sciences (NAAS), RB Singh said at present there were two things — quality and productivity — needed for any improvement in the agriculture sector.

Singh shared: "We really need to improve at some points which include reduction in poverty, high productivity, investment in agriculture and

STRATEGY SHIFT

After celebrating 2012 as the "Year of Excellence", the institute now believes a key shift from the in-house sugarcane research system to capacity development and extension system. The year 2013 is declared as "Year of Outreach" for the IISR. The year will witness efforts to reach out to far corners of villages and the farming community as the institute's commitment for effective extension service. Stretching out to reach farmers in the far end of the information network will involve special efforts on the part of the extension strategy at the institute.

"In the state, only 0.15 per cent to total GDP of agriculture is spent on agriculture which is lesser than it is done on national level. Research plays an important role in increasing agriculture production and the authorities should focus on the same," he added.

Director, IISR, S Solomon presented a brief account of institute's achievement during the last 60 years. "Since its carried out pioneering research work and carved out a niche for itself in the arena of sugarcane agriculture. As a research institute, the IISR has done all its efforts to address the concerns and expectations of Indian sugarcane farmers and sugar industry," he shared.

Senior scientist, IISR, AK Sah said that the number of sugarcane varieties developed by the institute helped a lot to farmers in reaping higher yield. "Techniques developed by the institute like Spaced Transplanting Technique (STP), bud chip, cane node technology have helped in fast multiplication of newly released varieties and reduction in seed quantity requirement," he added.

"The Institute has commercialised several machinery like sugarcane cutter-planter, paired-row sugarcane planter, raised bed seeder and Ratoon Management Device (RMD). These machines have helped in saving about 60 per cent of the cost of cultivation thus helping to overcome the labour scarcity and high labour cost to some extent," he pointed out.

MP Sanjay Singh and UP Agriculture Production Commissioner Alok Ranjan was also present on the

2 EXPRESS NEWS SERVICE
FEBRUARY 17 | 2013

Intensive food processing is need of the hour: Minister

EXPRESS NEWS SERVICE
LUCKNOW | FEBRUARY 16

TO PREVENT fruits and vegetables from spoiling, there is a need to take up food processing on a priority basis, Tariq Anwar, Minister of State for Agriculture and Food Processing Industries, said on Saturday.

Speaking at the Diamond Jubilee celebrations of Lucknow-based Indian Institute of Sugarcane Research, Anwar said, "As much as 25-40 per cent of fruits and vegetables produced in India are spoiled due to lack of storage facilities, which directly affects the farmers."

"Our bottlenecks are not in production, but in storage," added Uttar Pradesh Agriculture Minister Anand Singh on the occasion, which is also being celebrated as National Sugar Fest 2013 and AgroTech 2013.

"One way of cutting down losses is by giving priority to food processing," Anwar said. Recalling a recent International Summit of Agriculture Ministers in Germany, Anwar said, "In the interactions with agriculture ministers...they said that food processing is given priority, hence, be it fruits, vegetables, or any type of grains, the quantity that spoils is low, almost negligible. In India, only nearly 7-8 per cent food is processed, while in European countries, somewhere it is 50 per cent, 60 per cent and even 70 per cent. Then, their product is also exported and brings in foreign exchange. All this, either directly or indirectly, benefits the farmer," he said. "If we promote this industry, a lot of our problems can be solved and the benefits an be transferred to the farmers," he added.

He also said that despite similar levels of area under agriculture - nearly 14 crore hectares, China's foodgrain production in 2012 stood at 57 crore tonne while India's

SUNDAY HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
FEBRUARY 17, 2013
04 | hindustantimes

'NEED TO STRENGTHEN STRUCTURE TO AVOID FOOD GRAIN WASTAGE'

HT Correspondent
■ lkoreportersdesk@hindustantimes.com

LUCKNOW: Revealing the disparity between Indian and China in their food grain production, union minister of state for agriculture and food processing industries Tariq Anwar said, while India produces 25-cr tonne food grain on 14crore hectare of land, China produces 57crore tonne on same area.

Sharing the data at the inaugural session of the 'Agro Tech-2013' on Saturday, the minister said there was a need to reduce this gap by increasing efforts in research, extension and development. He also emphasised on strengthening infrastructure like cold storage, cold chain and processing units to avoid 25-40% wastage in vegetables, fruits and grains. Also present on the occasion. UP agriculture minister Kunwar Anand Singh laid emphasis on mechanisation of sugarcane culture and agriculture to solve the problem of labour scarcity.

Notably, Agro Tech-2013 and National SugarFest-2013 is being organised at Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow (IISR) to commemorate the IISR diamond jubilee celebration with the aim to develop agriculture for inclusive growth in UP. Dr MJ Khan of Agriculture Today said that the aim of the event is to make farmers aware about the latest technologies to increase the yield.

Senior scientist Dr AK Sah said that sugarcane varieties developed by the institute, including CoLk 8001, CoLk 8102, CoLk 94184 and CoLk 9709, helped farmers in reaping a higher yield. These varieties have marked their presence in larger areas of UP, Bihar, Haryana, and Punjab. Director of IISR Dr S Solomon presented a brief account of the institute's achievement during the last 60 years. Since its establishment, the IISR has carried out pioneering research work and carved out a niche for itself in the arena of sugarcane agriculture.

श्री राजधानी

लखनऊ • रविवार • 17 फरवरी, 2013

उत्पादन बढ़ाने के लिए शोध की जरूरत

सीनियर रिपोर्टर

- केंद्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर ने कहा कि भारत में चीन की अपेक्षा कम होता है उत्पादन
- हीरक जयंती एवं राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव-2013 शुरु

लखनऊ। केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर ने भारत में चीन के [illegible] कम खाद्यान्न का उत्पादन होता है [illegible] हमारे देश में उतनी ही जमीन पर सिर्फ [illegible] करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन होता है। [illegible] इस गैप को खत्म करने के लिये कृषि [illegible] और विकास में तेजी लाने कि जरूरत है। उन्होंने फल और सब्जी में 25से 40 प्रतिशत तक की बरबादी को रोकने के लिये [illegible] स्टोरेज कोल्ड चेन फूड प्रोसेसिंग में [illegible] लाने कि जरूरत है। इस अवसर पर प्रदेश के कृषि मंत्री आनंद सिह राज्य सरकार कि नीतियों से अवगत कराते हुए कृषि में मशीनों के ज्यादा प्रयोग पर जोर दिया तथा किसानों के आमदनी बढ़ाने के लिये कृषि लागत में कमी लाने पर जोर दिया। आज यहां भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान 60 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा पूरी होने आयोजित हीरक जयन्ती के मौके पर राष्ट्रीय शर्करा महोत्सव का शुभांरभ केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारीक अनवर ने किया। संस्थान के निदेशक सुशील सोलोमन ने बताया कि संस्थान अपने स्थापना के समय से ही अनूठे शोध कार्यक्रमों को अंजाम दे रहा है। जिससे आज गन्ना शोध एवं विकास में संस्थान एक विशिष्ट पहचान बना चुका है। पिछले 60 वर्षो की अथक एवं स्वर्णिम यात्रा में संस्थान के ताज में कई उपलब्धियों के पंख मोती जुड़ चुके हैं। डा. अजय कुमार साह वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित उन्नत गन्ना प्रजातियां जैसे कोलख 8009, कोलख 8102 , कोलख 94184, कोलख 9709 के प्रग्रहण से उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब एवं हरियाणा के गन्ना किसानों को अधिकतम उपज मिल कम कृषि उत्पादकता पर चिंता जताई और कहा कि जहां चीन में 14 करोढ़ हेक्टेयर भूमि में 57 करोड़ उन्हें गन्ना खेती से अधिक आय भी प्राप्त हुआ। संस्थान द्वारा विकसित अन्तरालित प्रतिरोपण विधि, बड-चिप विधि एवं केन-नोड तकनीक ने नई गन्ना प्रजातियों के संवर्धन तथा गन्ना बीज की मात्रा में कमी के दिशा में महत्त्रपूर्ण योगदान दिया।

सिंचाई जल बचत के लिए संस्थान द्वारा विकसित एकान्तर नाली सिंचाई विधि एवं क्रांतिक वृद्धि अवस्था में सिंचाई तकनीक ने पानी जैसी अमूल्य प्राकृतिक संपदा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्थान द्वारा विकसित गन्ना के साथ दलहन व तिलहन एवं अन्न खाद्यान फसलों के सहफसली खेती पद्धति को अपनाकर किसान खुशहाल एवं अधिक संपन्न हुआ है।

केंद्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री तारिक अनवर का स्वागत करते अधिकारी

स्वदेश चेतना

लखनऊ

रविवार, 17 फरवरी 2०13

जब तक किसानों की हालत नहीं सुधरेगी, देश की तरक्की नहीं होगी : तारिक अनवर

लखनऊ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की एक तिहाई कृषि में आधुनिक तकनीकी आबादी कृषि पर आधारित है। जब तक किसानों की हालत नहीं सुधरती तब तक देश की तरक्की नहीं की जा सकती है। उक्त बाते एग्रीकल्चर टुडे के तत्वावधान में रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में एग्रोटेक 2०13 का आयोजन के दौरान केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर ने कही। उन्होंने कहा कि देश में खाद्य सुरक्षा एक प्रमुख चुनौती है। कोल्ड स्टोरेज के अभाव में 25 से 4० प्रतिशत फल और सब्जी बरबाद हो जाती है। जिसका सीधा नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। कृषि के क्षेत्र में खासी उपलब्धि हुई हैं। दूध उत्पादन के क्षेत्र में पहला और सब्जी एवं फलों के उत्पादन में भारत का दूसरा स्थान है। कृषि के क्षेत्र में खासी प्रगति हुई है, लेकिन इसमें और ज्यादा आधुनिक तकनीक अपनाकर इसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश में कृषि पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि पूरे देश में किसानों की सुविधा के लिए आत्या योजना चलाई जा रही है। इसके अन्तर्गत जिला स्तर पर किसानों को जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। गरीबी निवारण में कृषि की महती भूमिका हो सकती है। ऐसे में कृषि वैज्ञानिकों को छोटे किसानों का ध्यान रखकर उन्हें स्वावलंबी बनाने के प्रयास करने चाहिए। प्रदेश के कृषि मंत्री कुंवर आनन्द सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि देश धरती और किसान समृद्ध हो ऐसी कृषि आधारित नीति सरकार बनायेगी। किसानों की जेब में क्या जाता है इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कृषि में मशीनीकरण जरूरी है, खेती अब विज्ञान हो गयी है। इसलिए किसान का पढ़ा लिखा होना जरूरी है। एग्रीकल्चर टुडे के डायरेक्टर डा. एम.जे. खान ने समारोह के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि किसानों को सही तकनीक के बारे में जागरुक करने की जरूरत है। कृषि के क्षेत्र में रिसर्च एवं उन्नत तकनीक के बारे में प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है। एग्रोटेक 2०13 कर प्रमुख उद्देश्य कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देना और किसानों को कृषि के बारे उन्नति तकनीक से अवगत कराना है। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वह स्टाल पर लगी चीजों को देखें और और समझें। आई.आई.एस.आर के डायरेक्टर डा. एस. सोलोमन ने कहा कि बीज गन्ने की बचत और कटाई उपरान्त शर्करा ह्रास को रोकने के लिए संस्थान ने उन्नत तकनीक विकसित की है। इसके अलावा संस्थान ने गन्ने की खेती के लिए यांत्रिकी के क्षेत्र में विशेष कार्य करते हुए ट्रैक्टर चालित बुवाई एवं खरपतवार नाशक यंत्र का विकास किया है। वर्तमान में संस्थान फसल सुधार के तहत जैव तकनीक पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन एपीसी ने कहा कि प्रदेश सरकार कृषि को उच्चतम प्राथमिकता दे रही है। सरकार की डेयरी, सब्जी एवं पोल्ट्री को उद्योग के रूप में विकसित करने की योजना है। इस अवसर पर कृषि मंत्री कुंवर आनन्द सिंह, कांग्रेस सांसद डा. संजय सिंह, कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन, मुख्य सचिव कृषि सिराज हुसैन, प्रेसीडेंट एग्रीकल्चर टुडे डा. एम.जे .खान, आई.आई.एस.आर के डायरेक्टर डा. एस. सोलोमन एवं डा. ए.के. शर्मा प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्वरूप

6 लखनऊ

लखनऊ • रविवार 17 फरवरी 2013

कृषि में आधुनिक तकनीक अपनायें किसान : तारिक अनवर

प्रदेश भर से आये किसानो ने हासिल की कृषि यंत्रों की जानकारी

वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ। एग्रीकल्चर टुडे के तत्वावधान में रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान मे एग्रोटेक-2013 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर ने दीप प्रज्जवलन कर किया। इस अवसर पर एग्रोटेक द्वारा निर्मित कृषि यंत्रों के स्टाल का भी श्री अनवर ने निरीक्षण किया। इसमें भाग लेने के लिए प्रदेश भर से भारी संख्या में किसान आये थे। किसानों ने स्टालों पर जाकर कृषि यंत्रों के संबंध में विस्तार से जानकारी हासिल की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री तारिक अनवर ने कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की एक तिहाई आबादी कृषि पर आधारित है। जब तक किसानों की हालत नहीं सुधरती तब तक देश की तरक्की नहीं की जा सकती है। उन्होंने कहा कि देश में खाद्य सुरक्षा एक प्रमुख चुनौती है। कोल्ड स्टोरेज के अभाव में 25 से 40 प्रतिशत फल और सब्जी बरबाद हो जाती हैं। जिसका सीधा नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। कृषि के क्षेत्र में खासी उपलब्धि हुई हैं। दूध उत्पादन के क्षेत्र में पहला और सब्जी एवं फलों के उत्पादन में भारत का दूसरा स्थान है। कृषि के क्षेत्र में खासी प्रगति हुई है लेकिन इसमें और ज्यादा आधुनिक तकनीकि अपनाकर इसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश में कृषि पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि पूरे देश में किसानों की सुविधा के लिए आत्या योजना चलाई जा रही है। इसके अन्तर्गत जिला स्तर पर किसानों को जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। गरीबी निवारण में कृषि की महती भूमिका हो सकती है। ऐसे में कृषि वैज्ञानिकों को छोटे किसानों का ध्यान रखकर उन्हें स्वावलंबी बनाने के प्रयास करने चाहिए। प्रदेश के कृषि मंत्री कुंवर आनन्द सिंह ने कहा कि देश धरती और किसान समृद्ध हो ऐसी कृषि आधारित नीति सरकार बनायेगी। किसानों की जेब में क्या जाता है इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। कृषि में मशीनीकरण ज़रूरी है, खेती अब विज्ञान हो गयी है। इसलिए किसान का पढ़ा लिखा होना जरूरी है। एग्रीकल्चर टुडे के डायरेक्टर डा. एम जे खान ने जानकारी देते हुए कहा कि किसानों को सही तकनीकि के बारे में जागरूक करने की जरूरत है। कृषि के क्षेत्र में रिसर्च एवं उन्नत तकनीकि के बारे में प्रचार प्रसार की आवश्यकता है। एग्रोटेक 2013 कर प्रमुख उद्देश्य कृषि क्षेत्र को बढावा देना और किसानों को कृषि के बारे उन्नति तकनीकि से अवगत कराना है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वह स्टाल पर लगी चीजों को देखें और और समझें। वही आई आई एस आर के डायरेक्टर डा० एस सोलोमन ने कहा कि बीज गन्ने की बचत और कटाई उपरान्त शर्करा ह्रास को रोकने के लिए संस्थान ने उन्नत तकनीकि विकसित की है। इसके अलावा संस्थान ने गन्ने की खेती के लिए यांत्रिकी के क्षेत्र में विशेष कार्य करते हुए टैक्टर चालित बुवाई एवं खरपतवार नाशक यंत्र का विकास किया है। वर्तमान में संस्थान फसल सुधार के तहत जैव तकनीकि पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कृषि उत्पादन आयुक्त आलोक रंजन ने कहा कि प्रदेश सरकार कृषि को उच्चतम प्राथमिकता दे रही है। सरकार की डेयरी, सब्जी एवं पोल्ट्री को उद्योग के रूप में विकसित करने की योजना है। कार्यक्रम के दौरान एग्रीकल्चर मीट का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कृषि संस्थानों के प्रतिनिधि एवं कृषि वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। इसमें कृषि विशेषज्ञों ने कृषि सुधार के बारे में अपने अपने विचार रखें। इस अवसर पर कुकरी प्रतियोगिता में विभिन्न छात्रों एवं कामकाजी महिलाओं ने व्यंजन बनाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।